पुणेकर

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

म.प्र.राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा

मध्यप्रदेश जनजातियाँ, विरासत, लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य

(यूनिट 10)

पूर्णतः नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार

मुलायमसिंह यादव एवं अजयसिंह यादव

आपकी सफलता का सहयोगी . . .
पुणेकर पब्लिकेशन्स
खजूरी बाजार–इन्दौर

© **सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन**

- इस पुस्तक मे दिये गये किसी भी भाग के लिये प्रकाशक /विक्रेता/मुद्रक/लेखक इस बात को कतई सुनिश्चित नही करता है कि इस पुस्तक के दी गई जानकारी अंतिम रुप से पूर्ण है। पाठको को यदि इस पुस्तक के किसी भी अंश या प्रश्न पर कोई संशय है तो वह अपन स्त्रोत के आधार पर उसका आकलन करे एवं यदि इस पुस्तक मे कोई विसंगति पाता है निम्न पते पर इस विसंगति को बताये जिससे कि आगामी संस्करण मे इस पुस्तक मे सुधार किया जा सके।इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई हैं फिर भी किसी त्रुटि के लिए , परीक्षार्थी को होने वाले किसी भी संताप या नुकसान के लिये प्रकाशक/विक्रेता/ लेखक जिम्मेदार नहीं होगा।

- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी या विधि से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

- इस पुस्तक का प्रकाशन प्रतियोगी परीक्षाओ मे तैयारी की दृष्टि से किया गया है। इस पुस्तक के लेखक/ प्रकाशक/विक्रेता का किसी भी समुदाय/व्यक्ति/संस्था/धर्म को किसी भी प्रकार से ठेस पहुँचाने का उद्देश्य नही है फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा करे ।
- किसी भी विवाद के लिए न्यायक्षेत्र इन्दौर होगा।

विशेष निवेदन

इस पुस्तक को सिलेवस के अनुसार ही तैयार किया गया है। फिर भी संभव है कि कुछ योजना या किसी जानकारी मे कोई परिवर्तन हो गया हो, जो कि हमारी जानकारी मे नही आ पाया हो,अतः किसी भी प्रकार की अंतिम जानकारी के लिये राजपत्र या मध्यप्रदेश शासन की सूचनाओ का अवलोकन करे ।

- संस्करण –**प्रथम-2024**
- **प्रकाशक : पुणेकर पब्लिकेशन्स, इन्दौर**
  ज़ी–7 राजगुरु काम्पलेक्स, खजूरी बाजार इन्दौर

- **www.punekarpublications.in**
- **punekerpublication@gmail.com**

अनुक्रमणिका

1. **जनजातियों का भौगोलिक विस्तार व जनगणना** 1

2. **जनजातियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान** 10

3. **विशेष पिछड़ी एवं घुमन्तू जनजातियाँ** 17

4. **जनजातियों के कल्याण के लिए योजनाएँ** 40

5. **म.प्र. की जनजातियों का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान** 51

6. **म.प्र. की जनजातीय संस्कृति विशिष्ट कलाएँ , त्यौहार,उत्सव, भाषा, बोली साहित्य सम्मान** 79

7. **म.प्र. प्रमुख जनजातीय संस्थान, संग्रहालय, प्रकाशन** 91

8. **म.प्र. की लोकसंस्कृति व लोकसाहित्य** 97

❒ महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न .....

❍❍❍

सिलेवस

10. मध्यप्रदेश की जनजातियाँ - विरासत, लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य

- मध्यप्रदेश में जनजातियों का भौगोलिक विस्तार, जनजातियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान।

- मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ, विशेष पिछड़ी जनजातियाँ एवं घुमन्तू जातियाँ, जनजातियों के कल्याण के लिए योजनाएँ। मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति परम्पराएँ, विशिष्ट कलाएँ, त्यौहार, उत्सव, भाषा, बोली एवं साहित्य ।

- मध्यप्रदेश की जनजातियों का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान एवं राज्य के प्रमुख जनजातीय व्यक्तित्व। मध्यप्रदेश में जनजातियों से संबंधित प्रमुख संस्थान, संग्रहालय, प्रकाशन।

- मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य ।

1 जनजातियों का भौगोलिक विस्तार व जनगणना

अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की विशेषता है और उस अनेकता के मूल में निश्चित रूप से भारत के विभिन्न प्रदेशों में स्थित जनजातियाँ हैं। जनजातियों की वैविध्यमय संस्कृति ने जिस भारतीय संस्कृति को उभरने में योगदान किया, वह भी विविधता को धारण करने वाली हुई है।

जनजाति से सामान्य आशय-वनवासी, मूलनिवासी, आदिमजाति, गिरिजन आदि से है।

भारत की जनगणना-1991 के अनुसार- 'ये केवल अपने सीमित साधनों से ही जीना सीख सके हैं और आज भी विज्ञान की इस चकाचौंध व सभ्यता की होड़ से अपरिचित ही हैं। ऐसे ही अपरिचित लोगों का उल्लेख भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति के अन्तर्गत किया गया है।

श्यामाचरण दुबे के अनुसार -'वास्तव में जनजाति व्यक्तियों का वह समूह है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में आवास या विचरण करता है और जो किसी आदि पूर्वज को ही अपना उद्‌गम मानता हो जिसकी एक सामान्य संस्कृति होती और जो आज भी आधुनिक सभ्यता के प्रभावों से परे हैं।

राल्फ लिण्टन के अनुसार- 'सरलतम रूप में जनजाति एक ऐसा मानव समूह है, जो एक विशेष भू-भाग पर रहता है तथा जिसमें सांस्कृतिक समानता, निरन्तर संपर्क तथा कुछ विशेष हितों के कारण सामुदायिक एकता की भावना होती है एवं जिसका जीवन रीति-रिवाज और व्यवहार के तौर-तरीके आदिम अर्थात् आदिकालीन विशेषताओं से युक्त रहते हैं।'

जनजातियों की विशेषतायें-

- एक निश्चित भू-भाग में निवास करती हैं जिसके कारण जनजातियों में सामान्य जीवन की विशेषताएँ विकसित हो जाती है। निश्चित भू-भाग जनजातियों की विशिष्ट पहचान है। जैसे- बैगा जनजाति का बैगाचक्क, भारिया जनजाति का पातालकोट, माडिया-मुरिया जनजाति का अबुझमाड़ क्षेत्र ।

जी. एस. घुरिये ने जनजातीय समूह को **'पिछड़े हिंदू'** कहा हैं।

- एक ही जनजाति के सभी सदस्यों में एक सामान्य संस्कृति अर्थात् रीति-रिवाज, नृत्य, धर्म, खान-पान, रहन-सहन होता है।
- ये सामान्यतः अपनी प्रथा, परम्परा, विश्वास आदि नातेदारी तक ही सीमित रखते हैं।
- एक जनजाति अन्तर्विवाही समूह है, प्रत्येक जनजाति इसका कड़ाई से पालन करते हैं।
- प्रत्येक जनजाति की अपनी एक भाषा होती है जिसके माध्यम से ये अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। ये जनजातियाँ प्रायः स्थानीय बोलियों का प्रयोग करती हैं।
- प्रत्येक जनजाति का एक मुखिया होता है जो अपने समाज की परम्पराओं का पालन कराने, नियंत्रण रखने एवं उल्लंघन करने पर दण्ड की व्यवस्था करता है।
- प्रत्येक जनजाति अपने आप में आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर रहती हैं एवं आर्थिक आवश्यकताओं को ये स्वयं ही पूरा कर लेते हैं।

भारत को विभिन्न **'जनजातियों का अजायबघर'** और मध्यप्रदेश को **'जनजातियों का घोंसला'** कहा जाता है।

म.प्र.में जनजातियाँ : सामान्य परिचय

- मध्य प्रदेश में विविध, समृद्ध एवं गौरवशाली जनजातीय विरासत है । **म.प्र.में भारत** की **सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या** निवास करती है जो भारत में पाई जाने वाली कुल जनजातीय जनसंख्या का **14.64%** है। (2011 की जनगणना के अनुसार)
- भारत में **10.45** करोड़ जनजातीय जनसंख्या है वहीं म.प्र.में **1.53** करोड़ जनजातीय जनसंख्या है।

- भारत की कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या प्रतिशत 8.63% है।
- म.प्र. की कुल जनसंख्या में जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत **21.09%** है।
- प्रदेश में कुल **89** जनजाति विकासखण्ड हैं।
- प्रदेश के **15** जिलों में विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा, भारिया, सहरिया के लिए **11** अभिकरण संचालित हैं।
- म.प्र की जनजातियाँ प्रोटो-आस्ट्रेलायड परिवार का प्रतिनिधित्व करती है।
- 2011 की जनगणना के अनुसार म.प्र. में कुल **43 जनजातियाँ** अधिसूचित है। [2003 से पूर्व म.प में 46 जनजातियाँ थीं। किंतु 8 जनवरी, 2003 को 3 जनजातियों को विलोपित कर दिया गया]

म.प्र. की अनुसूचित जनजातियाँ

1. अगरिया
2. आन्ध
3. बैगा
4. भैना
5. भारिया, भुमिया, भुईहार, भूमिया, भुमिआ, पालिहा, पांडो
6. भतरा
7. भील, भिलाला, बरेला, पटेलिया
8. भील मीना
9. भुंजिया
10. बिआर, बियार
11. बिंझवार
12. बिरहुल, बिरहोर
13. डामोर, डामरिया
14. धनवार
15. गदाबा, गदबा
16. गोड़, अरख, अर्राख, अगरिया, असुर बड़ी मारिया, बड़ा, मारिया, भटोला, भिम्मा, भूता, कोइलाभूता, कोलियाभूति, भार, बायसनर्हान, मारिया, दंडाभी मारिया, घुरू, धुरवा, बोधा, धुलिया, दोरला, गायकी, गत्ता, गत्ती, गैता, गोंड गोयारी, हिल मारिया, कंडरा, कलंगा, खटोला, कोइतर, कोया, खिरवार, खिरवारा, कुचा मारिया, कुचकी मारिया, माडिया, मारिया, माना, मन्नेवार, मोध्वा, मोगिया, मौंध्या, मुड़िया, मुरिया नगारची, नागवंशी, ओझा, राजगोंड, सोन्झारी झरेका, थाटिया, थोटया, बड़े, मारिया, बेड़ेमाड़िया, दरोई
17. हल्बा, हल्बी
18. कमार
19. कारकू
20. कवर, कंवर, कौर, घेरवा, राठिया, तंवर, छत्री
21. कीर (भोपाल, रायसेन तथा सीहोर जिले में) भारत सरकार की अधिसूचना दिनांक 08-01-2003 द्वारा विलोपित
22. खैरवार, कोंदर